+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

YOJANA MAGAZINE ANALYSIS

(योजना पत्रिका विश्लेषण)

(डिजिटल युग में कला और संस्कृति)

(March 2024)

(Part II)

TOPICS TO BE COVERED

- आधुनिक तकनीकों और संदर्भों के जरिये लोक कला की पुनर्कल्पना
- 'बुद्धिमत्ता के साथ कला' से 'कृत्रिम बुद्धिमत्ता' तक

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

आधुनिक तकनीकों और संदर्भों के जरिये लोक कला की पुनर्कल्पना:

परिचय:

- समकालीन समय में डिजिटलीकरण हमारे जीवन के हर पहलू में क्रांतिकारी परिवर्तन ला रहा है। जो लोग पुराने ढर्रे के साधनों का उपयोग करके पारंपरिक तरीके से काम कर रहे हैं उन पर इस परिवर्तन को अपनाने और इसके अनुरूप ढलने का दबाव लगातार बढ़ रहा है। यह चलन समकालीन से भारतीय लोक कला के क्षेत्र तक में प्रवेश कर गया है जो आधुनिक तकनीकी प्रगति को अपनाने के लिए बढ़ते दबाव का सामना कर रहा है।

- स्मार्ट प्रौद्योगिकी को समेकित करके लोक कला शैलियों को विकसित होने और भौगोलिक और सांस्कृतिक सीमाओं को लांघ कर डिजिटल प्रसार के माध्यम से अधिक दर्शकों तक पहुंचने का अवसर मिलना जरूरी है।

- फिर भी विकसित होती प्रौद्योगिकी के माहौल में ये कला शैलिया अपनी वास्तविकता बनाए रखें इसे सुनिश्चित करने के लिए एक कार्यप्रणाली खोजना महत्वपूर्ण है।

सांस्कृतिक पहचान का संरक्षण और परिवर्तन के अनुरूप ढलना:

- लोक कला शैलियाँ समुदायों की सांस्कृतिक विशिष्टताओं में गहराई से जुड़ी होती हैं और अनूठे रीति-रिवाजों को संरक्षित करने व सांप्रदायिक समन्वय को बढ़ावा देने के लिए एक माध्यम के रूप में काम करती हैं।
- ये कला शैलियाँ जिनकी अभिव्यक्ति चाहे संगीत, नृत्य या दृश्य विधाओं के माध्यम से की गयी हो समुदायों और भौगोलिक क्षेत्रों की सांस्कृतिक पहचान को एक विशेष रूप में ढालने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।
- लोक कलाओं की प्रवृत्ति गतिशील और अनुकूलनीय होती है जो अक्सर समकालीन प्रभावों और रुझानों से प्रभावित होती है। यह देखा जा रहा है कि कई लोक-कला शैलियाँ अब अपने स्थानीय दायरों तक सीमित नहीं हैं। वैश्वीकरण की प्रक्रिया से उन पर अंतर-सांस्कृतिक प्रभावों का मार्ग प्रशस्त हुआ है। उन्हें व्यापक मंच मिल रहे हैं और वे समसामयिक विषयों और तकनीकों को अपने में समाहित कर रही हैं।

- तत्वों के इस तरह के मिश्रण ने एक ओर जहां इन प्रथाओं को पुनर्जीवित किया है जिससे वे समकालीन दर्शक वर्ग के लिए प्रासंगिक बन गए हैं वहीं दूसरी ओर इन आयामों को शामिल करने से इन कला शैलियों के मूल सार में परिवर्तन आने और उनके कमजोर पड़ने का खतरा भी पैदा हो गया है।

पारंपरिक प्रदर्शन कलाओं की रूपांतरण सामर्थ्य:

- पारंपरिक प्रदर्शन कला के क्षेत्र में सजीव शारीरिक प्रदर्शन लंबे समय से कलात्मक अनुभव का अभिन्न अंग रहा है जो कलाकार और दर्शकों के बीच संबंध को एक समृद्ध आयाम प्रदान करता है। लेकिन जैसे-जैसे प्रौद्योगिकी विकसित होती जा रही है और आभासी माध्यमों के जरिये से प्रदर्शन कला अदायगी में बढ़ोतरी हो रही है पारंपरिक कला के दिग्गजों में इस बात को लेकर चिंता बढ़ रही है कि क्या आभासी माध्यमों के जरिए कला प्रदर्शन उन सूक्ष्म अभिव्यक्तियों को पर्याप्त रूप से उजागर कर सकता है जिनको भौतिक रूप से महसूस किए जाने की अपेक्षा की जाती है।
- जब किसी प्रतिष्ठित कलाकार के कला प्रदर्शन में मौजूद रहकर उसका आनंद उठाया जाता है तब कला शैलियों में दर्शकों की चेतना को एक ऐसे स्तर पर ले जाने की सामर्थ्य की अनुभूति का अहसास होता है जो उन्हें अपनी अंतरात्मा से जोड़ने की दिशा में एक परिवर्तनकारी यात्रा का मार्गदर्शन करती है।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

- भरतमुनि के नाट्यशास्त्र के रस सिद्धांत से प्रेरणा लेते हुए हम इस बात पर विचार कर सकते हैं कि कला चाहे वह दृश्य हो या प्रदर्शन, लोक हो या शास्त्रीय, यह हमारी अंतरात्मा से गहन रूप से जुड़ने और अवर्णनीय को व्यक्त करने का एक साधन है।

संरक्षण के लिए डिजिटल आयाम में परिवर्तन के सरोकार:

- आधुनिक युग में प्रस्तुति के लिए लोक कला और संगीत डिजिटल क्षेत्र की ओर अग्रसर हो रहे हैं। यह कदम इन कलाओं को अपनी सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने का अवसर प्रदान करता है और वे दर्शकों के व्यापक वर्ग तक पहुंच बना सकते हैं खासकर युवा पीढ़ी के बीच। हालांकि इस परिवर्तन यात्रा के दौरान पारंपरिक लोक कला शैलियों में निहित सूक्ष्म, अमूर्त और सहज तत्वों के कमजोर पड़ने की सम्भावना बारे में एक आशंका अवश्य है।
- हमें यह ध्यान में रखना होगा कि पारंपरिक लोक कला अपने भीतर इतिहास, प्रतीकवाद और सांस्कृतिक महत्व के तत्वों को समाहित किये हुए हैं। ऐसे तत्व आसानी से कंप्यूटर की बाइनरी भाषा या डिजिटल क्षेत्र के आभासी जगत में परिवर्तित नहीं हो सकते हैं। इन तत्वों की समग्रता को बनाए रखने के लिए नवाचार और संरक्षण के बीच एक नाजुक संतुलन की आवश्यकता होती है।

- इसलिए चुनौती यह सुनिश्चित करने में है कि डिजिटल अनुकूलन के बीच इन कला शैलियों का सार और मूलभूत तत्व कहीं लुप्त न हो जाए। इनका समाधान करने के लिए लोक कला के डिजिटलीकरण को विविधता और विरासत से उसके संबंध के प्रति संवेदनशीलता और सम्मान के साथ अपनाना आवश्यक है।
- परंपरा की गहरी समझ रखने वाले आधुनिक प्रौद्योगिकीविदों और कलाकारों के बीच सहयोगात्मक प्रयासों से यह सुनिश्चित करने का प्रयास किया जा सकता है कि डिजिटल रूप से अनुकूलित कृतियाँ उनके पारंपरिक समकक्षों की वास्तविकता और समृद्धि को बनाए रखें।

निष्कर्ष:

- जैसे-जैसे हम लोक कला के डिजिटल क्षेत्र में परिवर्तन की ओर बढ़ रहे हैं हम उस दोराहे पर चुनौतियों का भी सामना कर रहे हैं जहां प्रौद्योगिकी और सांस्कृतिक विरासत एक दूसरे से मिलती हैं।
- हमें यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि डिजिटल रूप से अनुकूलित कृतियाँ इन कला शैलियों के सांस्कृतिक मूलाधारों और विरासत के प्रति सत्यनिष्ठ बनी रहें।
- नवाचार और संरक्षण के बीच एक सुविचारित संतुलन बनाकर हम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि लोक कला शैलियाँ अपने सार को खोये बिना डिजिटल युग में फूले फलें।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

'बुद्धिमत्ता के साथ कला' से 'कृत्रिम बुद्धिमत्ता' तक:

भारत में 'बुद्धिमत्ता के साथ कला' का विकास:

- कला और बुद्धि प्राचीन काल से ही एक दूसरे से बंधे हुए हैं। प्राचीन काल में हमारे पास एआई यानी कृत्रिम मेधा नहीं थी लेकिन हमारे पास उल्लेखनीय बुद्धिमत्ता वाली कला की प्रचुरता थी।

- प्रारंभिक मानव ने अपनी बुद्धि से ऐसी महत्वपूर्ण कला का विकास किया जिसमें पत्थर तथा हाथीदांत से बनी कलाकृतियां, मिट्टी के बर्तन, धातुकर्म, कपड़ा उत्पादन, मनके बनाना, काष्ठ कला तथा उत्कीर्णन, गाड़ी बनाना, गुफाओं में चित्रकारी करना आदि शामिल हैं।
- भारत में 2600 और 1900 ईसा पूर्व के बीच हुए पहले शहरीकरण के दौरान हड़प्पा सभ्यता एक महत्वपूर्ण उदाहरण के रूप में उभरी। हड़प्पा सभ्यता में बुद्धि के साथ कला के बहुत सारे उदाहरण हैं।
- हड़प्पा काल के बाद दूसरा शहरीकरण गंगा घाटी में हुआ। इस दूसरे शहरीकरण काल में लोहे पर आधारित कुछ उल्लेखनीय तकनीकी नवाचार हुए। दिल्ली लौह स्तंभ जो 1500

वर्ष पुराना है, छह टन गढ़ा हुआ लोहा से बना है और लोहे में फास्फोरस का उपयोग हुआ है। इस प्रकार यह बुद्धि के साथ कला का और साथ ही उन्नत तकनीक का भी सच्चा उदाहरण है।

कला क्षेत्र में डिजिटल प्रौद्योगिकी का उदय:

- डिजिटल प्रौद्योगिकी के उदय ने डिजिटल पेंटिंग, ग्राफिक डिजाइन, एनीमेशन और इंटरैक्टिव मीडिया जैसे नए कला रूपों को जन्म दिया है। कलाकार आश्चर्यजनक दृश्य कलाकृतियां बनाने के लिए टैबलेट सॉफ्टवेयर प्रोग्राम और डिजिटल कैमरे जैसे डिजिटल उपकरणों का उपयोग करते हैं जिन्हें पारंपरिक तरीकों से हासिल करना पहले असंभव या कठिन था।
- कोविड-19 महामारी ने कला और संस्कृति क्षेत्र को फिर से नया रूप दिया जिससे एआई जैसे उपकरण ज्यादा प्रचलन में आए है। आज, हम आभासी कला संग्रहालयों प्रदर्शनियों आभासी संरक्षकों थिएटरों और बहुत कुछ का तेजी से उद्भव देख रहे हैं। महामारी ने सांस्कृतिक संस्थानों और कार्यक्रमों के लिए आभासी प्रारूपों को व्यापक रूप से अपनाने के लिए उत्प्रेरक के रूप में काम किया।

- वेबसाइटें, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म, ऑनलाइन गैलरी और डिजिटल आर्ट मार्केटप्लेस कलाकारों को व्यापक दर्शकों तक पहुंचने, साथी रचनाकारों से जुड़ने और यहाँ तक कि अपनी कलाकृति सीधे संग्राहकों को बेचने की सुविधा प्रदान करते हैं।
- इसने हमें डिजिटल संरक्षण का महत्व दिखाया। डिजिटल संरक्षण तकनीकें, जैसे डिजिटीकरण, मेटाडाटा प्रबंधन और डिजिटल संग्रह, भविष्य की पीढ़ियों के लिए डिजिटल कलाकृतियों आवश्यक है।

डिजिटल युग की चुनौतियां:

- डिजिटल युग कलाकारों और कला प्रेमियों के लिए यद्यपि कई अवसर लेकर आया है, लेकिन यह कई चुनौतियां भी प्रस्तुत करता है।
- डिजिटल कला निर्माण के लिए डिजिटल टूल और सॉफ्टवेयर में दक्षता की आवश्यकता होती है, जो प्रशिक्षण या संसाधनों की कमी के कारण कलाकारों के लिए में बाधा उत्पन्न कर सकती है।
- डिजिटल कला के ऑनलाइन प्रसार से कलाकृतियों की गुणवत्ता और प्रामाणिकता को पहचानना मुश्किल हो जाता है, जिससे विश्वास और विश्वसनीयता के मुद्दे पैदा होते हैं।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

- जैसे-जैसे डिजिटल हेरफेर तकनीक तेजी से परिष्कृत होती जा रही हैं, मूल कलाकृतियों और डिजिटल जालसाजी या प्रतिकृतियों के बीच अंतर करना अधिक चुनौतीपूर्ण होता जा रहा है।
- प्राथमिक चिंताओं में से एक डेटा गोपनीयता है, जिसके लिए मजबूत साइबर सुरक्षा उपायों और डेटा सुरक्षा प्रोटोकॉल की आवश्यकता होती है।

डिजिटल कला:

- डिजिटल युग ने कला की दुनिया को गहराई से बदल दिया है, जिससे रचनात्मकता सहयोग और नवीनता के नए रास्ते खुल गए हैं। जैसे जैसे प्रौद्योगिकी का विकास जारी है, डिजिटल कला की संभावनाएं असीमित हैं, जो कला के बारे में हमारी समझ और समाज में इसके स्थान को नया आकार देने का वादा करती है।
- हम पाते हैं कि कला और डिजिटल प्रौद्योगिकी के संयोजन ने कला के एक नए पुनर्जीवित रूप का निर्माण किया है जिसे 'डिजिटल कला' के रूप में जाना जाता है। डिजिटल कला न केवल पेंटिंग ग्राफिक डिजाइन, इंस्टॉलेशन और एनीमेशन को बदल दिया है बल्कि कविता सगीत और मूर्तिकला को भी नए दृष्टिकोण दिए हैं।

- **आधुनिक समय में डिजिटल प्रौद्योगिकियों का उपयोग निम्नलिखित कला रूपों में देखा जा सकता है:**

➢ **दृश्य कला:** ये कला रूप आमतौर पर एक कलाकार द्वारा निर्मित ठोस रूप होते हैं । सिनेमा दृश्य कल्पना चित्रण का उत्कृष्ट उदाहरण है। इस डिजिटल युग में हम कम प्रयास और न्यूनतम बजट में अपने सांस्कृतिक स्थानों, सांस्कृतिक पोशाकों आदि की दृश्य कल्पना बनाने के लिए नई तकनीकों का उपयोग कर सकते हैं। आज नई तकनीक की मदद से कोई भी किसी भी चीज को उतना ही चित्रित कर सकता है जितना वह कल्पना कर सकता है। हालांकि, दूसरी ओर हमें इस बात से भी अवगत होना चाहिए कि कुछ प्रौद्योगिकियां अनुचित उपयोगिता भी दिखाती हैं जैसे नकली या विरूपित वीडियो आदि।

➢ **चित्रकारी:** आज का कला रूप अत्यधिक डिजिटीकृत है, जहां एक कलाकार हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर का उपयोग करके कोई भी पेंटिंग बनाता है। ये पेटिंग्स कई तरह के डिजाइन जैसे ज्वेलरी डिजाइन और फैशन डिजाइन में मददगार होती हैं। आज, लोगों ने अक्सर अमूर्त पेटिंग के प्रति रुचि विकसित कर ली है, जहां डिजिटीकरण का अत्यधिक उपयोग और महत्व है।

➢ **मूर्तिकला:** आज की डिजिटल दुनिया में डिजिटल मूर्तियां बनाने के लिए 3डी तकनीकों का उपयोग किया जा रहा है। इसे मूर्तिकला की डिजिटल छाप भी कहा जा सकता है।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

➢ **संगीत:** आज की दुनिया में संगीत में भी डिजिटलीकरण का इस्तेमाल किया जा रहा है। भले ही किसी व्यक्ति की आवाज की गुणवत्ता औसत हो, वह 'ऑटो-ट्यून' की तकनीक का उपयोग करके इसे मधुर बना सकता है। कलाकारों की आवाज को सिंक्रोनाइज करने के लिए वाद्ययंत्र भी अब डिजिटल रूप से बजाए जाते हैं।

निष्कर्ष:

- डिजिटल प्लेटफॉर्म ने लोगों को कला और संस्कृति तक खुली पहुंच प्रदान की है, जिससे वे अपनी उंगलियों की मदद से आसानी से दुनिया में कहीं से भी भाग ले सकते हैं। डिजिटल तकनीक ने कला को बनाने, प्रदान करने और संरक्षित करने के तरीके को बदल दिया है।
- आज मल्टीमीडिया, इंटरैक्टिव इंस्टॉलेशन और आभासी वास्तविकता अनुभव बनाने के लिए डिजिटल उपकरण और सॉफ्टवेयर व्यापक रूप से सुलभ हैं। इंटरनेट कलाकारों को वैश्विक दर्शकों से जुड़ने के लिए एक महत्वपूर्ण मंच प्रदान करता है ।
- हालांकि डिजिटल तकनीक का उपयोग लगभग सभी कला रूपों में किया जाता है, जो इसे अधिक रोमांचक तथा सुलभ बनाता है, लेकिन कभी-कभी यह दर्शकों को अवास्तविक आनंद देता है, इसलिए सच्ची कला का उद्देश्य विफल हो जाता है। हमें डिजिटल तकनीक का कितना उपयोग करना चाहिए, इसके लिए हमें खुद को प्रतिबंधित करना चाहिए या सीमाएं बनानी चाहिए।